Research Paper Social Science

माताओं के प्रषासनिक एवं शैक्षिक व्यवसाय का किषोर बालक–बालिकाओं के सामाजिक पर्याप्ततापर प्रभाव का अध्ययन

(Matao ke Prshashanik Evam Shaikshik Vyavsay Ka Kishore Balak-Baliko Ke Samajik Paryaptata Par Prabhav Ka Adhyayan)

Dr. Amruta Shing

Dr. Gita Shukla

ABSTRACT

प्रस्तुत षोध अध्ययन में माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रषासनिक/वैक्षिक) एवं स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का उनके किषोर बालक–बालिकाओं केसामाजिक परिपक्वता कीसामाजिक पर्याप्तता पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। वैक्षिक एवं प्रषासनिक कार्य करने वाली माताओं पर सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी का प्रषासन कर उनके व्यवसाय को उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर में वर्गीकृत किया गया। इन माताओं के 180–180 किषोर बालक–बालिकाओं पर सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रषासन एवं फलाकंन कर प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विष्लेशण किया गया। परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ किमाता का प्रषासनिक एवं वैक्षिक व्यवसाय एवं व्यवसाय का स्तर किषोर बालकों एवं किषोर बालिकाओं की सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक पर्याप्तता को प्रभावित नहीं करती है।उच्च स्तर के माता के प्रषासनिक एवं वैक्षिक व्यवसाय का प्रभाव किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामजिक पर्याप्तता पर पड़ता है। जबकि मध्य एवं निम्न स्तर का माता का प्रषासनिक एवं वैक्षिक व्यवसाय किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक पर्याप्तता को प्रभावित नहीं करता है।

KEYWORDS

प्रस्तावना

किषोरावस्था, व्यक्ति के जीवन का ऐसा काल अथवा अवस्था है जब बालक वृद्धि एवं परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है। यह अवस्था मानव जीवन की अत्यंत ही संवेदनषील अवस्था है। इस समय में होने वाले परिवर्तन एवं विकास की छाप बालक पर जीवन पर्यन्त रहती है। स्वाभाविक रूप से किषोरों पर उनके अभिभावकों की सामाजिक एवं व्यवसायिक स्थिति का प्रभाव पड़ेगा, विषेशतः माता के व्यवसाय का क्योंकि इस अवस्था में अचानक होने वाले परिवर्तनों के फलस्वरूप किषोर अपनी माताओं से अधिक लगाव महसूस करते हैं। मातृत्व स्त्रियों के व्यक्तित्व का एक ऐसा पक्ष हैं जो उन्हें सम्पूर्ण बनाता है। मातृत्व की इस क्रिया के अंतर्गत माँ अपने बच्चों का पालन–पोशण करती है। पालन–पोशण के तरीकों में परिवर्तन की संभावना तब अधिक प्रबल हो जाती है जब माताओं का कार्यक्षेत्र परिवर्तित होता है अर्थात् वह व्यवसाय करने लगती हैं। ऐसी स्थिति में न केवल उस पर घर–परिवार अपितु कार्यक्षेत्र की भी जिम्मेदारी आ जाती है। इन दोनों भूमिकाओं में यदि समन्वय स्थापित नहीं होगा तो जीवन में कठिन स्थितियाँ उत्पन्न हो जायेंगी। ऐसे में माताओं को सूझ–बूझ के साथ परिवार के साथ सांमजस्य बिठाना आवष्यक हो जाता है। माता का व्यवसाय न केवल पारिवारिक स्थिति को अपितु किषोरों के व्यक्तित्व को भी प्रभावित कर सकता है।

बिबनगार्ड, इस्माइल एवं हतामी, महमूद (2011) ने बालकों के सामाजिक विकास एवं वैक्षिक प्रगति पर कामकाजी माताओं के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देष्य यह ज्ञात करना था कि क्या माता के कार्य करने का उनके किषोरों के सामाजिक विकास एवं वैक्षिक प्रगति पर कोई सार्थक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के परिणाम में इन्होंने बताया कि कामकाजी माताओं का उनके बालकों की वैक्षिक प्रगति एवं सामाजिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। माता किषोरों को सामाजिक संबंधों की रूपरेखा बताने वाली एक षिक्षक की भांति होती है। किषोर माता से ही परिवार, समाज व सामाजिक संबंधों के महत्व को जानते एवं पहचानते हैं। व्यवसायरत् होने के कारण माताओं को अधिक समय बाहर व्यतीत करना पड़ता है। माता को किषोरों से बातों एवं विचारों के आदान–प्रदान का उतना समय नहीं मिल पाता और किषोरों की सामाजिक परिपक्वता पर प्रभाव पड़ता है।

1 प्रवक्ता–स्वामी विवेकानन्दमहाविद्यालय, गोरखपुर
2 प्राध्यापक – ह्ा.मो.ह.गृहविज्ञान एवं विज्ञान महिला महा.(स्वषासी),जबलपुर

गॉटफ्राइड एवं सहयोगियों (1944) ने अपने दीर्घ षोध में माता एवं पिता के व्यवसाय, कार्य के घंटे, व्यवसायिक स्थिति के साथ अभिभावकीय षैली, घर के वातावरण एवं बालक के विकास संबंधी तीन चरों का अध्ययन किया। इस षोध में इन्होंने बताया कि माता–पिता की व्यवसायिक स्थिति सार्थक रूप से बालकों की बुद्धिमत्ता, विद्यालयीन उपलब्धि, आंतरिक प्रोत्साहन एवं सामाजिक परिपक्वता को प्रभावित करती है। माता का प्रेम ही किषोरों में साहनुभूति तथा प्रेम की आधारषिला बनता है। बालक का समाज व परिवार एक प्रकार का सामाजिक–सांस्कृतिक समूह होता है। किषोर इसी समूह के माध्यम से विषेशकर माता के माध्यम से सामाजिक व्यवहार सीखता एवं प्रदर्षित करता है। जब व्यवसायरत् माताएँ किषोरों को सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागिता करना, सामाजिक नियमों, मानकों, परम्परा एवं प्राथाओं के प्रति दृढ़ निश्ठावान होने के गुण सीखाती हैं तो किषोर सामाजिक परिपक्वता की ओर बढ़ते है।

उद्देष्य

1. माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रषासनिक/वैक्षिक) का किषोर बालकों/बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सामाजिक पर्याप्तता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रषासनिक/वैक्षिक) का किषोर बालक एवं बालिकाओं के सामाजिकपर्याप्तता पर लिंग भिन्नता का अध्ययन करना।
3. माता के व्यवसाय के स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का किषोर बालकों/बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सामाजिकपर्याप्तता पर प्रभाव का अध्ययन करना ।
4. माता के व्यवसाय के स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का किषोर बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक पर्याप्तता पर लिंग भिन्नता का अध्ययन करना ।

परिकल्पना

1. माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रषासनिक/वैक्षिक) का किषोर बालकों/बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सामाजिकपर्याप्तता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रषासनिक/वैक्षिक) का किषोर बालक एवं बालिकाओं के सामाजिकपर्याप्तता पर लिंग भिन्नता कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. माता के व्यवसाय के स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का किषोर बालकों/बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह केसामाजिकपर्याप्तता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. माता के व्यवसाय के स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का किषोर बालक एवं बालिकाओं के सामाजिकपर्याप्तता पर लिंग भिन्नता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

न्यादर्ष

तालिका क्रं – 01

माता के व्यवसाय की प्रकृति	व्यवसाय का स्तर	किषोर बालक	किषोर बालिकाएँ	योग
प्रषासनिक	उच्च स्तर	30	30	60
	मध्य स्तर	30	30	60
	निम्न स्तर	30	30	60
वैक्षिक	उच्च स्तर	30	30	30
	मध्य स्तर	30	30	60
	निम्न स्तर	30	30	60
कुल योग		180	180	360

प्रयुक्त उपकरण

समाजिक परिपक्वता – मापनी नलिनी राव
सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी –श्री एल.एन. दुबे एवं श्री बी. निगम

प्रदत्त संकलन विधि

न्यादर्ष में चयनित उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर के वैक्षिक एवं प्रषासनिक व्यवसाय वाली माताओं के 30–30 किषोर बालक एवं बालिकाओं पर समाजिक परिपक्वता मापनी का प्रषासन किया गया एवं प्राप्तांकों का सांख्यिकीयविष्लेशण किया गया एवं निश्कर्श प्राप्त किए गए।

परिणामों का विष्लेशण एवं व्याख्या

तालिका क्रं. 02

उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर के प्रषासनिक एवं वैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक

पर्याप्तता (एस.ए.) के तुलनात्मक परिणाम

स्तर	व्यवसाय की प्रकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	'पी' मान
उच्च	प्रषासनिक	60	79ण्42	10ण्40	2ण्64	ढ 0ण्01
	षैक्षिक	60	75ण्03	7ण्60		
मध्य	प्रषासनिक	60	76ण्95	8ण्70	0ण्33	झ 0ण्05
	षैक्षिक	60	77ण्48	9ण्17		
निम्न	प्रषासनिक	60	77ण्15	9ण्64	0ण्73	झ 0ण्05
	षैक्षिक	60	78ण्37	8ण्60		

स्वतंत्रता के अंष – 118
0.05 स्तर पर न्यूनतम निर्धारित मान– 1.98
0.01 स्तर पर न्यूनतम निर्धारित मान– 2.62

उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पश्ट हो जाता है कि उच्च स्तर के प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक पर्याप्तता के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निकाले गये क्रान्तिक अनुपात का मान 2.64 है, जो कि 0.01 स्तर पर निध्र्ारित न्यूनतम मान 2.62 की अपेक्षा अधिक है। यह अंतर सांख्यिकीय दृश्टिकोण से सार्थक है। माता के प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय एवं व्यवसाय के उच्च स्तर का किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामा. जिक पर्याप्तता पर प्रभाव पड़ता है।इसके विपरीत मध्य एवं निम्न स्तर के प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक पर्याप्तता पर माता के व्यवसाय के मध्य एवं निम्न स्तर एवं व्यवसाय की प्रकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। (क्रान्तिक अनुपात – 0.33 एवं 0.73 झ 0.05)।

तालिका क्रं. 03
प्रषासनिक एवं द्यैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किषोर बालकों, किषोर
बालिकाओं एवं किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक पि. रपक्वता के तुलनात्मक परिणाम

समूह	व्यवसाय की प्रकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
बालक	प्रषासनिक	90	221ण्82	19ण्65	0ण्76	70ण्05
	षैक्षिक	90	219ण्63	18ण्41		
बालिकाएँ	प्रषासनिक	90	236ण्92	25ण्49	2ण्03	ढ0ण्05
	षैक्षिक	90	229ण्72	21ण्95		
बालक एवं बालिकाएँ	प्रषासनिक	180	229ण्37	23ण्82	2ण्00	ढ0ण्05
	षैक्षिक	180	224ण्68	2047		

स्वतंत्रता के अंष – 358
0.05 स्तर पर न्यूनतम निर्धारित मान – 1.97
0.01 स्तर पर न्यूनतम निर्धारित मान – 2.59

उपरोक्त तालिका में प्रदर्षित परिणामों से स्पश्ट है कि प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किषोर बालकों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निकाले गये क्रांतिक अनुपात का मान 0.76 है जो कि 0.05 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान 1.97 की अपेक्षा कम है। यह अंतर सांख्यिकीय दृश्टिकोण से सार्थक नहीं है। इसके विपरीत प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं की किषोर बा. लिकाओं एवं किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निकाले गये क्रान्तिक अनुपात का मान 2.03 एवं 2.00 है जो कि 0.05 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान 1.97 की अपेक्षा अधिक है। यह अंतर सांख्यिकीय दृश्टिकोण से सार्थक है। ये परिणाम दर्षाते हैं कि माता के प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय का किषोर बालकों की सामाजिक परिपक्वता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि किषोर बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता पर माता के व्यवसाय की प्रकृति का प्रभाव पड़ता है।



उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर के प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किषोर बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक परिपक्वता के कारक सामाजिक पर्याप्त. ता पर माता के व्यवसाय एवं व्यवसाय के स्तर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि उच्च स्तर का माता का प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता के कारक सामाजिक पर्याप्तता को प्रभावित करता है किन्तु मध्य एवं निम्न स्तर प्रभावित नहीं करता है।

गोल्ड एवं एन्ड्रेस (1979) ने अपने षोध में बताया कि व्यवसायरत् माताओं के किषोर, गृहिणी माताओं के किषोरों की अपेक्षाकृत स्वयं को अधिक आत्म–संतुश्ट, सामाजिक रूप से सुरक्षित एवं समाज द्वारा स्वीकृत महसूस करते हैं। विषेशकर किषोर बालि. काएँ अधिक सामाजिक, योग्य, सफल, आत्म–निर्भर एवं षैक्षिक प्रगति में क्रियाषील होती हैं। आधुनिक युग में पारिवारिक परिवेष बदल रहा है, लोगों के सोचने का क्षेत्र विस्तृत हो रहा है। परिवार के सदस्य एवं किषोर माता के व्यवसायरतत् होने की प्रवृत्ति को स्वीकार कर रहे हैं। किषोरों के लिये माताओं का व्यवसायरत् होना पहले के समय की अपेक्षा अधिक स्वीकार्य होने लगा है किंतु फिर भी माता से भ. ावनात्मक लगाव होने के कारण एवं माता के सानिध्य की कमी किषोरों की सामाजिक परिवक्वता को प्रभावित करती है। माता किषोरों को सामाजिक संबंधों की रूपरेखा बताने वाली एक षिक्षक की भांति होती है। किषोर माता से ही परिवार, समाज व सामाजिक संबंधों के महत्व को जानते एवं पहचानते हैं।

REFERENCES

1. माता का प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय एवं व्यवसाय का स्तर किषोर बालकों एवं किषोर बालिकाओं की सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक पर्याप्तता को प्रभावित नहीं करती है। द्य 2. उच्च स्तर के माता के प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय का प्रभाव किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामजिक पर्याप्तता पर पड़ता है। जबकि मध्य एवं निम्न स्तर का माता का प्रषासनिक एवं षैक्षिक व्यवसाय किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक पर्याप्तता को प्रभावित नहीं करता है। द्य 3. माता के प्रषासनिक व्यवसाय एवं व्यवसाय के स्तर का किषोर बालक, किषोर बालिकाओं एवं किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक पर्याप्तता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। द्य 4. माता का षैक्षिक व्यवसाय एवं व्यवसाय का स्तर किषोर बालक, किषोर बालिकाओं एवं किषोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सामाजिक परिपक्वता की सामाजिक पर्याप्तता को प्रभावित नहीं करता है। द्य संदर्भ ग्रंथ द्य 1. पाण्डे, वन्दना एवं निगम, भूपेन्द्र (2004) "छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में बाल संगोपन पद्धति की भूमिका" रिसर्च लिंक ; संस्क. रण 15 भाग तृतीय (5) ; पृश्ठ सं. 100–105 द्य 2. सिंह, प्रसाद, राजेन्द्र एवं अन्य (2010), विकासात्मक मनोविज्ञान प्रथम संस्करण, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाषन, दिल्ली, पृश्ठ सं. 179, 350–351 द्य 3. श्रीवास्तव, डी. एन., अनुसंध्ाान विधिया, साहित्य प्रकाषन, आगरा, तृतीय संषोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण, पृश्ठ सं. – 109–112 द्य 4- Ellen, Green Berger (1984) "Defining Psychosocial Maturity In Adolescence", Advances In Child Behavioral Analysis & Therapy Volume Page 1-37. | 5- Kothari C.R. (2004) "Research methodology Methods and Techniques" Second edition, New Age International Publication, New Delhi, Page no. 8 |